इस्लाम और आतंकवाद

देश के कायर और नपुंसक राजनीतिक नेतृत्व के कारण मंगलवार का दिन एक बार पुनः अमंगलकारी सिद्ध हुआ। राजस्थान की राजधानी जयपुर में हिन्दू धर्मस्थल तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों को निशाना बनाकर आतंकवादी अपने नापाक इरादों में सफल हो गये। एक सौ से ज्यादा निर्दोष हिन्दू श्रद्धालु तथा अन्य नागरिक सदैव के लिए अपने घरपरिवार से बिछुड़ गये। इस बार भी वही हुआ जो - हर बार होता है। केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार ने भी कुछ शब्दों में इस घटना की निन्दा कर दी। सेकुलर दलों के पास तो इस प्रकार की घटनाओं के खिलाफ झूठे ही सही निन्दा के भी शब्द नहीं हैं। सवाल फिर वही घूम-फिर कर कि आखिर हत्याओं का यह सिलसिला जो इस धरती से हिन्दुओं का सफाया करने पर तुला है कब तक चलेगा? कौन हैं ये आतंकी? क्या रिश्ता है इनका इस माटी से? ढेर सारे प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं। जब तक रोग को हम जानेंगे नहीं तो उसका उपचार भी नहीं कर पायेंगे। वैसा ही आतंकवाद के सम्बन्ध में भी है। जब हम आतंकवाद को जानेंगे नहीं तो उसका मुकाबला भी नहीं कर पायेंगे। क्या यह सच नहीं कि इस राष्ट्र का कायर समाज अपने ही बन्धु-बांधवों की लाशों की अनदेखी कर रहा है? एकएक उजड़ते- घर, सिन्दूर पोछती मांग को देखने से इन्कार कर रहा है। यह कैसी कायरता है कि अपने ही पवित्र धर्मस्थलों एवं आराध्य देवों के दर्शन सेना के साये में भी अपमानित होकर होते हैं। आखिर कब तक मन्दिर रक्त-रंजित होते रहेंगे? क्या है यह आतंकवाद? इस देश का एक वर्ग ऐसा भी है जो आतंकवाद के साथ इस्लाम शब्द जोड़े जाने पर विरोध करता है। वे इसे इस्लाम को बदनाम करने की साजिश बताते हैं। पर क्या उन्हें नहीं मालूम कि केवल भारत ही नहीं पूरी दुनियाँ में इस्लाम और अल्लाह के नाम पर मौतों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है? भारत की पवित्र माटी को निर्दोषों के खून से क्यों रंगा जा रहा है? क्यों रोजरोज निरपराध हिन्दुओं की हत्या होती है-? क्यों अफगानिस्तानपाकिस्तान से -

हिन्दुओं का पूरी तरह सफाया हो गया? क्यों बांग्लादेश में हिन्दुओं के सफाये का अन्तिम चरण चल रहा है? क्यों पाक अधिकृत कश्मीर से हिन्दुओं का सफाया हो गया? क्यों कश्मीर घाटी मुस्लिम बहुल होते ही भारत विरोधी हो गयी और हिन्दुओं का वहाँ से सफाया हो गया? क्यों रूस के मुस्लिम बहुल क्षेत्र रूस से अलग हो गये या शेष अलग होना चाहते हैं? क्यों यूगोस्लाविया खण्डित हो गया? क्यों दुनियाँ भर के मुसलमान इजराइल का नामोनिशान मिटा देना चाहते हैं? क्यों दुनियाँ का हर मुस्लिम बहुल क्षेत्र अपनी मातृभूमि का चीर हरण करने में कोई संकोच नहीं करता है? आखिर चेचेन्या, यूगोस्लाविया, कोसोवो, कश्मीर घाटी सबकी एक जैसी स्थिति, एक ही कारण क्यों है? क्यों इस्लाम दुनियाँ भर में आतंकवाद का पर्याय बन गया है और क्यों आज दुनियाँ के लगभग सभी आतंकवादी हमलों की जड़ें मदरसों तक जाती हैं? आईद्वारा प्रायोजित आज जिसे सिमी .आई.एस., हुजी, अलकायदा, दीनदार अंजुमन, लश्कर-ए-तैयबा, जैशमोहम्मद आदि आतंकवादी संगठन कहा जा रहा है-ए-, जिसे इस देश का कायर राजनीतिक नेतृत्व गुमराह एवं बेरोजगार नौजवानों की करतूत कह रहा है, वह वास्तव में वैसा नहीं है। यह तो देश और दुनियाँ को नष्ट करने की एक अन्तर्राष्ट्रीय साजिश है जो इस्लाम के बुनियादी सिद्धान्तों में एक है। प्रतिदिन सुबहशाम समाचारों के स-ाथ हम सबके सामने निर्दोष हिन्दुओं की लाशों के चिथड़े उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही परोसा जा रहा है। नित्य निरन्तर हो रहे आतंकी हमले तो यही आभास कराते हैं कि जैसे हमारी धमनियों में रक्त नहीं पानी बह रहा हो और हिन्दू समाज इसे अपनी नियति मान बैठा हो। अगर यह सच नहीं तो क्यों प्रतिदिन देश के किसी न किसी कोने में हो रहे निर्दोष हिन्दुओं से सम्बन्धित हत्याकाण्ड हमें विचलित नहीं करते? क्या यह शासन सत्ता की कमजोरी बन चुका है अथवा अपने निहित वोट बैंक की खातिर इस देश का नेतृत्व जान बूझकर उससे अंजान बना है। समय आ गया है अगर हमें हिन्दुस्तान में हिन्दू संस्कृति और परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखना है तो हमें आतंकवाद से लड़ने के लिए तैयार होना ही होगा। जब तक 'जेहाद' और 'जन्नत' का विचार इस

धरती पर रहेगा आतंकवाद समाप्त नहीं हो सकता। आओ संकल्प करें जेहाद और जन्नत के विचार का समूल नाश करने का। तभी धर्म और संस्कृति बचेगी और हमारी अस्मिता भी सुरक्षित रहेगी।